लेसर फ्लोरकिन संरक्षण संकट

चर्चा में क्यों?

राजस्थान के नसीराबाद और अजमेर से आवारा कुत्तों को अनियंत्रित रूप से **अरवार संरक्षण रिज़र्व** के वन क्षेत्र में छोड़ा जाना, **लेसर फ्लोरकिन के लिये गंभीर खतरा** बन गया है।

मुख्य बिंदु

- **जनसंख्या में गिरावट:** लेसर फ्लोरकिन (*Sypheotides indicus*), जो कभी राजस्थान के वर्षा-आधारित **घासभूमि क्षेत्रों** में सामान्य रूप से पाया जाता था, की संख्या में **97% की विनाशकारी गिरावट** आई है।
- वर्ष 2025 में अजमेर, केकड़ी और **शाहपुरा के प्रजनन स्थलों** पर केवल एक नर पक्षी देखा गया, जबकि वर्ष 2020 में इनकी संख्या 39 थी।
- **बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS)** द्वारा किये गए परिदृश्य सर्वेक्षण में इस प्रजाति की घटती संख्या को रेखांकित किया गया, जिसमें एकमात्र नर बंदनवाड़ा के पास देखा गया।

लेसर फ्लोरकिन (Sypheotides indicus)

- यह भारत में पाई जाने वाली **तीन स्थानिक बस्टर्ड प्रजातियों में से एक** है, अन्य दो प्रजातियाँ हैं- **बंगाल फ्लोरकिन** (गंभीर रूप से संकटग्रस्त) और **ग्रेट इंडियन बस्टर्ड** (गंभीर रूप से संकटग्रस्त)।
  - यह बस्टर्ड परिवार का सबसे छोटा पक्षी है तथा अपने विशिष उछलते हुए प्रजनन प्रदर्शन के लिये प्रसिद्ध है।
- स्थानीय भाषा में इसे **'तनमोर'** या **'खामोर'** कहा जाता है, जो 'मोर' शब्द से व्युत्पन्न है।
- यह मुख्य रूप से **राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात** में मनाया जाता है।
- **संरक्षण की स्थिति:**
- **IUCN स्थिति**: गंभीर रूप से संकटग्रस्त (Critically Endangered)
- **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची I
- **CITES:** परिशिष्ट II

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/lesser-florican-conservation-crisis